सामूहिक भोज (बाटी-चोखा)

भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर की 135वीं जयंती के उपलक्ष्य में संस्थान में सामूहिक भोज का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कोई अलग समिति गठित नहीं की गई और न ही किसी एक व्यक्ति को विशेष जिम्मेदारी सौंपी गई। सभी ने पद-प्रतिष्ठा से ऊपर उठकर सामूहिक रूप से इस आयोजन को सफल बनाया।

संस्थान के सभी शिक्षकों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों, सुरक्षा कर्मियों, माली, विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों ने मिलकर भोजन तैयार किया तथा सभी ने एक साथ जमीन पर बैठकर भोजन ग्रहण किया। इस अवसर पर न कोई निदेशक था और न ही कोई कर्मचारी—सभी ने समान रूप से सामूहिक भोज का आनंद लिया, जिससे समाज में सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिल सके।

कार्यक्रम की गरिमा को और भी विशेष बनाते हुए निदेशक सहित सभी ने साथ बैठकर भोजन किया तथा अपने-अपने बर्तन स्वयं साफ किए। इस प्रकार के आयोजन समाज को यह संदेश देते हैं कि सभी लोग समान हैं और सभी को बराबरी का अधिकार है, जिससे सामाजिक समरसता को सुदृढ़ किया जा सकता है।

आज

प्रयागराज, बुधवार १५ अप्रैल, २०२६

जीवी पंत संस्थान में आयोजित कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करते मुख्य अतिथि।

सामाजिक समरसता दिवसके रूपमें मनायी गयी डा. आंबेडकर जयंती

राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से समावेशी समाज का दिया संदेश

झूंसी (प्रयागराज)। डा. भीमराव आंबेडकर की १३५वीं जयंती के अवसर पर गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज में 'सामाजिक समरसता दिवस' के रूप में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परिसर स्वच्छता, एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा सपरिवार सहभोज जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से समानता, सहयोग और सामूहिक उत्तरदायित्व का सशक्त संदेश दिया गया।

संस्थान में जहां काम, वहां हम सूत्रवाक्य को अपनाते हुए बिना किसी औपचारिक समिति के सभी शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं सहित लगभग ३०० प्रतिभागियों ने दिनभर के कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता निभाई। सामाजिक समरसता एवं अंत्योदय विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि डा. आंबेडकर के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि उनके विचारों को व्यवहार में उतारने में है। उन्होंने अंत्योदय की अवधारणा को सामाजिक न्याय, गरिमा और समान अवसर से जोड़ते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति के सम्मान पर बल दिया। मुख्य अतिथि के रूप में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति सत्य वीर सिंह ने कहा कि सुदृढ़ भविष्य के निर्माण के लिए इतिहास की समझ आवश्यक है। उन्होंने डा. आंबेडकर के योगदान को सामाजिक न्याय से आगे बढ़कर राष्ट्र निर्माण की व्यापक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बताया। विशिष्ट अतिथि प्रो. रामचंद्र जेएनयू ने बाबा साहेब के करुणा और मैत्री के संदेश को सामाजिक समरसता का आधार बताया। उन्होंने समाज के प्रति पे बैक की भावना विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।वहीं, भूतपूर्व आईजी के.पी. सिंह ने प्रशासन की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सामाजिक समरसता के लिए मानवीय संवेदनशीलता अत्यंत आवश्यक है। अध्यक्षीय वक्तव्य में सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति सूर्य प्रकाश केसरवानी ने कहा कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने के लिए शासन, समाज और अकादमिक संस्थानों के बीच समन्वय जरूरी है। कार्यक्रम के अंत में सभी सहभागियों ने जाति-भेद से ऊपर उठकर समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान के लिए कार्य करने का सामूहिक संकल्प लिया। संध्या में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ जिसके बाद सपरिवार सहभोज ने आपसी संवाद और आत्मीयता को और प्रगाढ़ किया।

Library
G.B. Pant Social Science Institute
Allahabad

हिन्दुस्तान

भरोसा नए हिन्दुस्तान का

बुधवार
15 अप्रैल 2026, वैशाख कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, विक्रम सम्वत् 2083, प्रयागराज

नगर संस्करण, वर्ष 17, अंक 103, 16 पेज, मूल्य ₹ 7.00 • पांच प्रदेश • 23 संस्करण

जीबी पंत संस्थान में सामाजिक समरसता दिवस पर स्मरण किया

प्रयागराज। गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान में डॉ. भीमराव आंबेडकर की 135वीं जयंती पर 'सामाजिक समरसता दिवस' के रूप में मनाया गया। परिसर स्वच्छता, राष्ट्रीय संगोष्ठी और सपरिवार सहभोज जैसे कार्यक्रमों में करीब 300 लोगों ने भाग लिया। निदेशक प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि आंबेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि उनके विचारों को व्यवहार में उतारना है। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति सत्य वीर सिंह ने संविधान की मूल भावना-न्याय, समानता और बंधुत्व को समरस समाज का आधार बताया। विशिष्ट अतिथि प्रो. रामचंद्र और केपी सिंह ने सामाजिक न्याय, जिम्मेदारी और मानवीय संवेदनशीलता पर जोर दिया। अंत में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम और सहभोज ने आत्मीयता का माहौल और मजबूत किया।

राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित

युनाइटेड भारत

हिन्दी दैनिक 15-04-2026

प्रयागराज, गंगापार/यमुनापार

सामाजिक समरसता दिवस के रूप में मनी अंबेडकर जयंती

संगोष्ठी व सहभोज का आयोजन

युनाइटेड भारत

झूंसी। डॉ. भीमराव आंबेडकर की 135वीं जयंती पर गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान में 'सामाजिक समरसता दिवस' के रूप में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परिसर स्वच्छता अभियान, राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं सपरिवार सहभोज का आयोजन किया गया। 'जहाँ काम, वहाँ हम' के सूत्रवाक्य को अपनाते हुए संस्थान के शैक्षणिक व गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों तथा छात्र-छात्राओं सहित लगभग 300 लोगों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। कार्यक्रम के अंतर्गत 'सामाजिक समरसता एवं अंत्योदय' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन संस्थान के सभागार में किया गया। संगोष्ठी का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। संस्थान के निदेशक प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि

डॉ. आंबेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि उनके विचारों को व्यवहार में उतारने में है। उन्होंने अंत्योदय की अवधारणा को सामाजिक न्याय, समान अवसर और गरिमा से जोड़ते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने पर जोर दिया। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति सत्य वीर सिंह (इलाहाबाद उच्च न्यायालय) ने कहा कि सुदृढ़ समाज निर्माण के लिए इतिहास की समझ आवश्यक है। उन्होंने संविधान के मूल तत्व–न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व–को सामाजिक समरसता की आधारशिला बताया और अधिकारों के साथ कर्तव्यों के संतुलन पर बल दिया। उन्होंने गांवों तक विकास पहुंचाने की आवश्यकता भी रेखांकित की। विशिष्ट अतिथि प्रो. रामचंद्र (जेएनयू, नई दिल्ली) ने करुणा और मैत्री को सामाजिक समरसता का मूल बताते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति के योगदान को समझने की आवश्यकता बताई। वहीं के. पी. सिंह (भूतपूर्व आईजी) ने कहा कि कानून के सही सामाजिक अर्थ के लिए मानवीय संवेदनशीलता जरूरी है और सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारना होगा। अध्यक्षीय उद्बोधन में भूतपूर्व वरिष्ठ न्यायमूर्ति सूर्य प्रकाश केसरवानी ने कहा कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने के लिए शासन, समाज और अकादमिक संस्थानों के समन्वय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी में सामाजिक समरसता को व्यवहारिक रूप देने पर गंभीर चर्चा हुई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुभाष कुमार ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अर्चना सिंह ने प्रस्तुत किया। इस दौरान उपस्थित सभी लोगों ने सामाजिक समरसता, समानता और अंतिम व्यक्ति के उत्थान हेतु संकल्प लिया। संध्या में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अंत में सपरिवार सहभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। यह आयोजन न केवल डॉ. आंबेडकर के विचारों को पुनर्स्मरण करने का अवसर बना, बल्कि सामाजिक न्याय और समावेशी विकास पर सार्थक विमर्श का मंच भी सिद्ध हुआ।

Library
G.B. Pant Social Science
Allahabad

6 राज्य
2 केंद्रशासित प्रदेश
22 संस्करण
महानगर
वर्ष 29। अंक 299। पृष्ठ : 16
मूल्य : सात रुपये

अमर उजाला

सुदृढ़ भविष्य निर्माण के लिए इतिहास की समझ जरूरी : न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह

15-04-2026

झूंसी के गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान में आयोजित संगोष्ठी में मौजूद अतिथि । संवाद

झूंसी। डॉ.भीमराव आंबेडकर की जयंती पर गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान में सामाजिक समरसता दिवस मनाया गया। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह ने कहा कि सुदृढ़ भविष्य निर्माण के लिए इतिहास की समझ अत्यंत आवश्यक है। इतिहास से अनभिज्ञ रहकर किसी भी समाज को सशक्त बनाना संभव नहीं है। स्वागत संस्थान के निदेशक प्रोफेसर योगेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। विशिष्ट अतिथि प्रो.रामचंद्र और पूर्व आईजी केपी सिंह रहे। अध्यक्षता करते हुए न्यायमूर्ति माननीय सूर्य प्रकाश केसरवानी ने कहा कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए शासन, समाज और अकादमिक संस्थानों के बीच समन्वय की आवश्यकता है। संचालन डॉ.सुभाष कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ.अर्चना सिंह ने किया। संवाद